आईसीडब्ल्यूए समाचार पत्रक

अंक 18 जुलाई-सितम्बर 2019

दिनांक 10 अप्रैल, 2019 को सप्रू हाउस में प्रो. वी. कामकोटि, प्रोफेसर, कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग, आईआईटी चेन्नई, द्वारा व्याख्यान

एक व्याख्यान का आयोजन सप्रू हाउस में 10 जुलाई 2019 को किया गया था, जिस अवसर पर प्रो. वी. कामकोटि, कम्प्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के प्रोफेसर, आईआईटी चेन्नई; एसोसिएट डीन, आईआईटी चेन्नई तथा सदस्य, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड ने ''5जी टेक्नोलॉजी फ्रोम एक इंडियन पर्सपेक्टिव'' पर एक व्याख्यान दिया। इस आयोजन की अध्यक्षता डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने की। प्रो. कामकोटि ने उल्लेख किया कि 5जी नीति के लिए किसी भी देश के पास पाँच एक-दूसरे से जुड़े कारकों के होने की आवश्यकता होती है: अंतर्राष्ट्रीय मानक, लागत, सुरक्षा, प्रौद्योगिकी और अभिशासन। यह स्पष्ट करते हुए कि भारत को अधिक सुरक्षित 5जी प्रणाली के निर्माण के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकी के अनुसंधान और विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, वक्ता ने यह भी कहा कि भारत को भविष्य को देखने और 6जी हेतु प्रौद्योगिकी विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने महसूस किया कि यह भारत के लिए 5जी पर अपनी तकनीक को स्वदेशी बनाने का एक उपयुक्त समय है। वार्ता के उपरांत प्रश्न-उत्तर का भी दौर चला।

आईसीडब्ल्यूए की प्रमुख बातें

- प्रो. वी. कामकोटि, प्रोफेसर, कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग, आईआईटी चेन्नई, द्वारा व्याख्यान
- सप्रू हाउस में ''द यूएस-ईरान स्टैंडऑफ: एसेसिंग द इम्प्लीकेशन्स'' पर पैनल चर्चा
- श्री वी. श्रीनिवास द्वारा ''इंडियाज रिलेशन्स विद द इंटरनेशनल मॉनेट्री फंड: 25 ईयर्स इन पर्सपेक्टिव 1991-2016'' पुस्तक का विमोचन एवं चर्चा
- ''टेकिंग स्टॉक ऑफ इंडिया-लैटिन अमेरिका एंड द कैरेबियन रिलेशन्स'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
- ''द आईसीजे जजमेंट ऑन कुलभूषण जाधव केस: लुकिंग अहेड'' पर गोलमेज चर्चा
- श्री तिलक देवाशेर ''पाकिस्तान: बलूचिस्तान कॉननड्रम'' पुस्तक का विमोचन एवं चर्चा
- ''इंडिया-श्रीलंका रिलेशन्स इन प्रेसेन्ट कॉटेस्ट? इज़ इट द टाईम वित रिओरियेन्टेशन ऑफ द पॉलिसी'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
- ''इंडिया-अफ्रीका पार्टनरशिप इन ए ग्लोबल आर्डर: प्रार्यरटिज, प्रोसपैक्टस एण्ड चैलेन्जिस'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन

"द यूएस-ईरान स्टैंडऑफ: एसेसिंग द इम्प्लीकेशन्स" पर एक पैनल चर्चा, 16 जुलाई 2019, सप्रू हाउस

दिनांक 16 जुलाई 2019 को परिषद में ''द यूएस-ईरान स्टैंडऑफ: एसेसिंग द इम्प्लीकेशन्स'' पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता राजदूत अनिल त्रिगुणायत ने की और श्री प्रबीर पुरकायस्थ, प्रधान संपादक, न्यूजक्लिक, श्री प्रमित पाल चौधरी, विदेशी संपादक, हिंदुस्तान टाइम्स, परिषद की तरफ से रिसर्च फैलो डॉ. स्तुति बनर्जी और डॉ. दीपिका सारस्वत पैनलिस्ट थे।

राजदूत त्रिगुणायत ने अपने आरंभिक अवलोकनों में कहा कि संयुक्त व्यापक कार्य योजना (जेसीपीओए) में कुछ खामियां हो सकती है लेकिन इसने ईरान के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में फिर से सम्मिलित हो सकने हेतु एक अवसर प्रदान किया। डॉ. दीपिका सारस्वत ने बदलते इरानी परिदृश्य को प्रस्तुत किया जो इसकी 'रणनीतिक धैर्यता' की वर्षभर लंबी नीति की समाप्ति के संबंध में था। श्री प्रमित पाल चौधरी ने परिचर्चा की कि वाशिंगटन में विभिन्न विदेशी नीतियां परिचालित थी मुख्यत: राष्ट्रपति ट्रंप की, व्हाइट हाउस की, वाशिंगटन स्टैबलिशमेंट (पेंटागन, इंटेलिजेंस एजेन्सियों, और सरकारी विभाग) की, और साथ ही अमेरिकी कांग्रेस की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संयुक्त राज्य की विदेशी नीति विभिन्न मार्गो से संचालित होती है जिसके कारण उनकी नीतियों का अनुमान लगा पाना कठिन हो जाता है।

श्री प्रबीर पुरकायस्थ ने इस बात पर जोर दिया कि जेसीपीओए को बचाने का एकमात्र रास्ता है यदि यूरोपीय संघ और भारत जैसे देश रूस तथा चीन का साथ दें, और इसे ईरान के लिए संभव बनाएं कि वह कुछ तेल का निर्यात करे। डॉ. स्तुति बनर्जी ने इस मामले पर यूएस की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा कि ईरान पर द्वितीयक प्रतिबंधों को लागू करके, अमेरिका यह सुनिश्चित कर रहा है कि घरेलू लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एकतरफा प्रतिबंध, अंतर्राष्ट्रीय हो जाएँ। इस आयोजन में परिचर्चा के अंत में प्रतिभागियों के बीच आपसी बातचीत का आयोजन किया गया।

दिनांक 26 जुलाई 2019 के सप्रू हाउस में श्री वी. श्रीनिवास द्वारा "इंडियाज रिलेशन्स विद द इंटरनेशनल मॉनेट्री फंड: 25 ईयर्स इन पर्सपेक्टिव 1991-2016" पुस्तक का विमोचन एवं चर्चा

आईसीडब्ल्यूए का एक प्रकाशन, ''इंडियास रिलेशन विथ द इंटरनेशनल मोनैटरी फंड: 25 इयर्स इन पर्सपेक्टिव 1991-2016'', जिसके लेखक श्री वी. श्रीनिवास हैं, का विमोचन 26 जुलाई 2019 को किया गया तथा इस पर सप्रू हाउस में चर्चा आयोजित की गई। इस पुस्तक का विमोचन मुख्य अतिथि, श्री शक्तिकांत दास, गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के भारत के वैकल्पिक गवर्नर के करकमलों से किया गया, जिन्होंने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट किए। इसके उपरान्त एक पैनल परिचर्चा का आयोजन किया गया तथा इस सत्र के लिए पैनलिस्ट्स थे: श्री के.वी. ईपेन, सचिव, प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के कार्यकारी निदेशक (भारत) के पूर्व वरिष्ठ सलाहकार; डॉ. अनूप सिंह, सदस्य, 15वां भारतीय वित्त आयोग तथा पूर्व निदेशक, एशिया पेसेफिक डिपार्टमेंट, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, और डॉ. एंड्रियास बाउर, वरिष्ठ रेसिडेंट प्रतिनिधि, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, नई दिल्ली। इस परिचर्चा को सुश्री सुकन्या बालाकृष्णन ने मध्यस्थता प्रदान की। परिचर्चा का केन्द्र रही अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में भारत की संलग्नता और कैसे भारत अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के भीतर साल 2000 के मध्यावधि के दौरान एक ऋणी से एक ऋण-दाता बन गया।

30 जुलाई, 2019 को सप्रू हाउस में प्रो. अरुण कुमार ग्रोवर द्वारा "द्वितीय विश्व युद्ध और भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति" पर व्याख्यान

प्रो. अरूण कुमार ग्रोवर द्वारा ''द्वितीय विश्व युद्ध तथा भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति'' पर 30 जुलाई 2019 को सप्रू हाउस में एक व्याख्यान दिया गया। डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने अपने आरंभिक उद्बोधन में उन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं व कारकों के महत्व को प्रस्तुत किया जिन्होनें भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास को प्रभावित किया, खासकर विज्ञान और राजनैतिक-कौशल के माध्यम से अन्य देशों के साथ सहकार्य और सहयोग के संदर्भ में।

अपने व्याख्यान में, प्रो. ग्रोवर ने वर्ष 1772 में ईस्ट इंडिया कंपनी अधिनियम के पारित होने के बाद से लेकर विज्ञान, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और अनुसंधान व विकास सहित भारत में उच्च शिक्षा के विकास के उद्धरणों को प्रस्तुत किया। वर्ष 1854 में ईस्ट इंडिया कंपनी के बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष पद से लॉर्ड डलहौजी का हटाया जाना वर्ष 1857 में कलकत्ता, मद्रास और बॉम्बे में तीन विश्वविद्यालयों की स्थापना का कारण बना। फिर, लाहौर और इलाहाबाद में क्रमशः 1882 और 1887 में दो और विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। 19वीं शताब्दी के अंत तक भारत में पाँच विश्वविद्यालय थे: बॉम्बे, कलकत्ता, मद्रास, लाहौर और इलाहाबाद।

उन्होंने कहा कि भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (1904) का पारित किया जाना भारत में उच्च शिक्षा की प्रगति की दिशा में प्रोत्साहन प्रदान करना था, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति तथा अनुसंधान कार्यों को काफी प्रोत्साहन मिला। इस अधिनियम के तहत, विश्वविद्यालयों को शिक्षकों की नियुक्ति, विभागों की स्थापना और अनुसंधान में संलग्न होने की आवश्यकता थी।

प्रो. ग्रोवर ने उल्लेख किया कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय संस्थानों को राष्ट्रीय विकास में योगदान के लिए अनुसंधान संचालित करने हेतु वित्तीय समर्थन एवं स्वतंत्रता की आवश्यकता थी। यह भारत में ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए उच्च वैज्ञानिक अनुसंधान हेतु संस्थानों को बनाए रखने और विकसित करने में मदद करेगा। साथ ही मौलिक विज्ञान में अनुसंधान के पोषण की आवश्यकता पर भी बल दिया गया।

"टेकिंग स्टॉक ऑफ इंडिया-लैटिन अमेरिका एंड द कैरेबियन रिलेशन्स" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी - सप्रू हाउस, 8-9 अगस्त, 2019

विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने दिनांक 8-9 अगस्त 2019 को ''टेकिंग स्टॉक ऑफ इंडिया-लैटिन अमेरिका एंड द कैरेबियन रिलेशन्स'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी के प्रतिभागियों मे पूर्व राजनयिक एवं पूरे देश भर के सात विश्वविद्यालयों से शोधकर्ता शामिल थे। थिंक-टैंक और उद्योग मंडलों के प्रतिनिधियों ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन में भारत और लैटिन अमेरिका और कैरेबियाई संबंध जैसे चार सत्र शामिल थे: राजनीतिक संबंध मजबूत करना, व्यापार, निवेश और विकास में पूरकों का सृजन, सांस्कृतिक और सामाजिक बातचीत के माध्यम से सेतु निर्माण, तथा भारत-एलएसी संबंधों में प्रवासी और पहचान।

स्वागत उद्बोधन श्री वी. मुरलीधरन, विदेश राज्य मंत्री तथा संसदीय मामलों के राज्य मंत्री द्वारा दिया गया। प्रारंभिक अवलोकनों को डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा प्रदान किया गया तथा प्रमुख संबोधन महामहिम सुश्री आशना कन्हाई, भारत में सूरीनाम की राजदूत द्वारा दिया गया।

विभिन्न सत्रों में स्वास्थ्य, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा, कृषि, आदि क्षेत्रों में संलग्नताओं के माध्यम से भारत और एलएसी क्षेत्र के बीच संबंध बनाने की आवश्यकताओं पर चर्चा हुई। इसने साहित्यिक कार्यों के अनुवाद की भूमिका पर भी प्रकाश डाला, जो लोगों से लोगों के संपर्क को बढ़ाने का एक प्रभावी तरीका है। एलएसी क्षेत्र और भारत के प्रवासी भारतीयों की पारम्परिक प्रकृति और उनके अनुभवों पर चर्चा करने की आवश्यकता पर भी चर्चा की गई। सम्मेलन का उद्देश्य क्षेत्र पर विद्वता की पहचान करना और प्रोत्साहित करना था, क्योंकि भारत एलएसी क्षेत्र के देशों के साथ अपनी साझेदारी को सुदृढ़ बनाता है।

गोलमेज चर्चा "द आईसीजे जजमेंट ऑन कुलभूषण जाधव केस: लुकिंग अहेड", सप्रू हाउस, 14 अगस्त, 2019

सप्रू हाउस में दिनांक 14 अगस्त 2019 को ''द आईसीजे जजमेंट ऑन कुलभूषण जाधव केस: लुकिंग अहेड'' पर गोलमेज चर्चा आयोजित की गई। सत्र की अध्यक्षता राजदूत विवेक काटजू ने की। श्री नरिंदर सिंह, पूर्व एएस (एलएंडटी), एमईए, श्री राणा बनर्जी, गणमान्य फैलो, आईपीसीएस, डॉ. आशीष शुक्ला और परिषद के रिसर्च फैलो डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्यजी पैनलिस्ट थे।

परिचर्चा के दौरान, यह उल्लेख किया गया कि पाकिस्तान हमेशा भारत द्वारा पाकिस्तान में प्रायोजित किए जा रहे आतंकवाद पर एक कहानी बनाने के लिए 'सिल्वर बुलेट' की तलाश में रहता है, और इस दौरान जाधव का मनगढ़ंत मामला पाकिस्तान के लिए महत्वपूर्ण बना रहा। कुलभूषण जाधव की गिरफ्तारी से पहले और बाद की घटनाओं का विस्तृत कालानुक्रमिक वर्णन करने के बाद, पैनलिस्टों ने उल्लेख किया कि आईसीजे ने अपने फैसले के माध्यम से पाकिस्तान को नैतिक रूप से कांसुलर एक्सेस प्रदान करने के लिए कहा, जिसकी उसने अनुमति नहीं दी, और जिनेवा कन्वेंशन का उल्लंघन करता रहा। आईसीजे ने फैसले की प्रभावी समीक्षा करने और पुनर्विचार किए जाने की भी बात कही।

चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली (आईसीएस) और विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए), सप्रू हाउस, 19 अगस्त, 2019

सप्रू हाउस में दिनांक 19 अगस्त 2019 को आईसीएडब्ल्यूए और इंस्टीट्यूट ऑफ चाइनीज स्टडीज (आईसीएस) द्वारा संयुक्त रूप से ''फ्राम सप्रू हाउस लॉन्स टू श्री राम रोड: कॉमेमोरैटिंग 50 इयर्स ऑफ इंस्टीट्यूट ऑफ चाइनीज स्टडीज (आईसीएस)'' शीर्षक पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राजदूत अशोक कांथा, निदेशक, आईसीएस ने आईसीएस तथा आईसीडब्ल्यू के साथ अभिसरण के साथ-साथ चीन पर आईसीएस की शैक्षिक तथा विदेश नीति के विमर्श संबंधी योगदान पर प्रकाश डाला। कई जानी-मानी हस्तियां/विशेषज्ञ तथा राजनयिक इस अवसर पर उपस्थित थे, जिनमें प्रो. आशीष नंदी,

प्रो. माधवन, प्रो. मनोरंजन मोहंती, राजदूत किशन राणा, प्रो. अलका आचार्य, श्री रवि भूतलिंगम, प्रो. अश्विनी देशपांडे, सुश्री नोमिता उन्नीकृष्णन पलट शामिल थे, जिन्होंने आईसीएस की यात्रा के बारे में वार्ता की जो सप्रू हाउस से वर्ष 1969 में शुरू हुई थी। उन्होंने आईसीएस के सृजन के साथ जुड़े उनके व्यक्तिगत स्मरणों को भी इस अवसर पर साझा किया। डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने आईसीएस को इस अवसर पर बधाई दी और ''आईसीएस@50: पास्ट एंड फ्यूचर'' विषय पर आयोजित परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता की। यह कार्यक्रम आईसीएस के इतिहास पर आयोजनों की श्रृंखला का हिस्सा था।

श्री तिलक देवाशेर द्वारा, ''पाकिस्तान: द बलूचिस्तान कॉनड्रम'', पुस्तक का विमोचन और चर्चा सप्रू हाउस, 22 अगस्त, 2019

आईसीडब्ल्यूए का एक प्रकाशन, ''पाकिस्तान: द बलोचिस्तान कॉनन्ड्रम'', जिसके लेखक श्री तिलक देवाशेर हैं, का विमोचन 22 अगस्त 2019 को किया गया तथा इस पर सप्रू हाउस में चर्चा आयोजित की गई। इस चर्चा की अध्यक्षता श्री मारूफ रजा, सलाहकार संपादक, टाइम्स नाऊ ने की। परिचर्चा के सहभागियों में शामिल थे श्री राणा बनर्जी, गणमान्य अध्येता, आईपीसीएस, श्री सुशांत सरीन, वरिष्ठ अध्येता, ओआरएफ एवं डॉ. आशीष शुक्ला, अनुसंधान अध्येता, आईसीडब्ल्यूए। परिचर्चा ने इंगित किया कि किस प्रकार बलूचिस्तान संघर्षों की एक मोजैक और हिंसा की कई परतों के साथ दोषपूर्ण आरेखों को प्रस्तुत करता है, जो बलूच नागरिकों और सरकार के बीच, अंतर और आंतरिक संघर्ष और झड़प, जातीय विभाजन से लेकर सांप्रदायिक संघर्ष और आतंकी हमलों को दर्शाता है। चर्चा के प्रतिभागियों ने इस पुस्तक की सराहना की कि एक भारतीय शोधकर्ता द्वारा बलूचिस्तान के बारे में सबसे व्यापक और सामयिक अध्ययन किया गया है। यह उल्लेख किया गया था कि इस पुस्तक ने बलूचिस्तान पर भारत के भीतर ज्ञान-आधार को बहुत व्यापक तौर पर समामेलित कर दिया है। आगे यह भी उल्लेख किया गया कि लेखक के मजबूत प्रलेखन और अनुसंधान, और सम्मोहक डेटा के साथ व्याप्ति, इस पुस्तक को बहुत ही रोचक और जानकारीपूर्ण बनाता है। चर्चा प्रतिभागियों ने जोर दिया कि पुस्तक में जिन क्षेत्रों की व्यापकता को कवर किया गया है, उन्हें बहुत विवरणों के साथ प्रलेखित किया गया है, और इस बात पर जोर दिया कि बलूच के पास एक मजबूत मामला इसलिए है क्योंकि जब वे कहते हैं कि उन्हें अवैध रूप से हड़पा जा रहा है और पाकिस्तान में समामेलित किया जा रहा है।

लीडेन विश्वविद्यालय में इतिहास और अंतर्राष्ट्रीय संबंध पर सहायक प्रोफेसर डॉ. विनीत ठाकुर द्वारा व्याख्यान, सप्रू हाउस, 23 अगस्त, 2019

सप्रू हाउस में दिनांक 23 अगस्त 2019 को इंस्टीट्यूट ऑफ हिस्ट्री, लीडन विश्वविद्यालय, नीदरलैंड में विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डॉ. विनीत ठाकुर ने ''कम्युनल अफेयर्स ओवर इंटरनेशनल अफेयर्स: आईआर'स अराइवल इन लेट कोलोनियल इंडिया'' शीर्षक पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। नीति अनुसंधान केंद्र, नई दिल्ली के अध्येता डॉ. जोरावर दौलत सिंह ने सत्र की अध्यक्षता की। आईसीडब्ल्यूए के इतिहास के क्रम में यह व्याख्यान तीसरा आयोजन था, जैसा कि यह अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा वैश्विक मामलों पर देश का सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्र स्तरीय थिंक-टैंक (प्रबुद्ध समूह) है।

औपनिवेशिक काल में भारत में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर अध्ययन विषय के आगमन के ऐतिहासिक संदर्भ को बताते हुए, डॉ. ठाकुर ने वर्ष 1943 में आईसीडब्ल्यूए की स्थापना में शामिल घटनाओं और व्यक्तित्वों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। ऐसा करके एक अन्य संस्थान, भारतीय अंतर्राष्ट्रीय मामले संस्थान (आईआईआईए) की भूमिका की स्थापना वर्ष 1936 में की गई तथा कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता पर जोर दिया गया। डॉ. ठाकुर ने इसका पुरजोर समर्थन किया कि औपनिवेशिक काल के उत्तरार्ध के समय भारत में अंतर्राष्ट्रीय मामलों के अध्ययन को, दोनों संस्थानों के बीच वैचारिक और वैधता प्रतियोगिता द्वारा आकार दिया गया था। आईसीडब्ल्यूए ने मार्च 1947 में सफलतापूर्वक एशियाई संबंध सम्मेलन का आयोजन किया, जिसने आईआईआईए के भाग्य को निर्धारित किया। बंटवारे के समय यह पाकिस्तान चला गया, फिर पाकिस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (पीआईए) के साथ कुछ समय तक अपना अस्तित्व बनाए रखने के उपरान्त धीरे से यह बंद हो गया।

आईसीडब्ल्यूए अनुसंधान संकाय के साथ तुर्की से मीडिया प्रतिनिधिमंडल के बीच परस्पर बातचीत, सप्रू हाउस, 26 अगस्त 2019

अनादोलू एजेंसी, अंकारा के प्रधान संपादक, श्री मेहमत ओजटर्क के नेतृत्व में 16 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 26 अगस्त 2019 को आईसीडब्ल्यूए का दौरा किया और परिषद के अनुसंधान अध्येताओं के साथ परस्पर बातचीत की। परस्पर चर्चा, तुर्की की घरेलू राजनीति, पश्चिम एशिया और भारत के खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव पर केंद्रित रही। प्रतिनिधियों ने मीडिया के महत्व और उस तरीके पर भी चर्चा की, जिसमें यह तुर्की में कार्य कर रहा है।

डॉ. जमाल अल-मूसावी, महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, सल्तनत ओमान से वार्ता, सप्रू हाउस, 27 अगस्त, 2019

सप्रू हाउस में दिनांक 27 अगस्त 2019 को आईसीडब्ल्यू द्वारा आयोजित डॉ. जमाल अल-मूसावी, महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, सल्तनत ओमान द्वारा एक वार्ता की गई। डॉ. मूरावी ने ''ओमान, द गल्फ रीजन एंड इंडिया: पर्सपेक्टिव ऑन मेरीटाइम-रिलेटेड एक्टिविटी फ्रॉम द म्यूसियोग्राफिकल कॉन्टेक्स्ट ऑफ द नैशनल म्यूसियम-सल्तनत ऑफ ओमान'' पर वक्तव्य दिया। वक्तव्य की अध्यक्षता प्रो. हिमांशु प्रभा रॉय, अनुसंधान अध्येत्ता, ऑक्सफोर्ड सेंटर फॉर हिंदू स्टडीज, लुडविग मैक्सिमिनल यूनिवर्सिटी, म्यूनिक ने की। डॉ. जमाल-उल-मूसावी ने कहा कि द नैशनल म्यूसियम ओमान वित्तीय तथा प्रशासनिक तौर पर स्वतंत्र है। ओमान की रणनीतिक स्थिति और व्यापक तट रेखा ओमान को फारस की खाड़ी के माध्यम से अरब सागर और अफ्रीका के पूर्वी तट से जोड़ती है। ओमान और भारत के समुद्री व्यापार संबंध का इतिहास कांस्य युग से जुड़ा है जो लोगों से लोगों के वाणिज्य और व्यापार को दर्शाता है। ओमान में मगन की प्राचीन सभ्यता, भारत में सिंधु घाटी सभ्यता से मेल खाती है। ओमान के राष्ट्रीय संग्रहालय में हड़प्पा के मिट्टी के बर्तनों का संग्रह है। कुल मिलाकर, व्याख्यान ने भारत और खाड़ी क्षेत्र के बीच सामान्य रूप से ऐतिहासिक समुद्री संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया और विशेष रूप से म्यूसियोग्राफिकल संदर्भ में ओमान पर।

"इंडिया-श्रीलंका रिलेशन्स इन प्रेसेन्ट कॉंटेक्स्ट? इज़ इट द टाईम फॉर रिओरियेन्टेशन ऑफ द पॉलिसी" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, सप्रू हाउस, 29-30 अगस्त, 2019

विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने "इंडिया-श्रीलंका रिलेशन्स इन प्रेसेन्ट कॉंटेक्स्ट? इज़ इट द टाईम फॉर रिओरियेन्टेशन ऑफ द पॉलिसी?" पर एक संगोष्ठी का आयोजन 29-30 अगस्त 2019 को सप्रू हाउस, नई दिल्ली में किया। संगोष्ठी के प्रतिभागियों में पाँच पूर्व राजदूत शामिल थे, जिनमें से तीन ने श्रीलंका में अपनी सेवाएं दी थी, साथ ही साथ इसमें तीन पत्रकारों ने, ग्यारह विश्वविद्यालयों के शिक्षाविदों ने, तीन थिंक-टैंकों के शोधकर्ताओं ने, और रक्षा एवं खुफिया कर्मियों ने भी सहभागिता की। आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टी. सी.ए. राघवन द्वारा स्वागत उद्बोधन और भारत सरकार के पूर्व विदेश सचिव, राजदूत निरुपमा राव उद्घाटन उद्बोधन दिये गये। संगोष्ठी में भारत-श्रीलंका संबंधों के विभिन्न पहलुओं को कवर करने वाले पाँच सत्र थे, जिनमें ऐतिहासिक, 80 के दशक में भारत-श्रीलंका संबंध, राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा पहलू शामिल थे।

विभिन्न सत्रों में भारत और श्रीलंका के बीच ऐतिहासिक संलग्नता, मौजूदा परिप्रेक्ष्य में दोनों देशों के बीच राजनीतिक सहयोग के महत्व पर चर्चा की गई, जिसमें इनके देशज, धार्मिक संबंधों पर गहन अध्ययन की जरूरत पर प्रकाश डाला गया, जो कि भारत और श्रीलंका के बीच विद्यमान है, ताकि इस क्षेत्र में उभरते हुए गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों को समझा जा सके; दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग की वर्तमान स्थिति और श्रीलंका के साथ आर्थिक कूटनीति पर चीन का दृष्टिकोण; सहयोग का सुरक्षा पहलू और अवसर जो नीली अर्थव्यवस्था सहयोग को बढ़ाने में मौजूद हैं; पर्यटन और परस्पर जुड़ाव तथा श्रीलंका के विदेशी और रक्षा संबंध, एवं साथ ही द्विपक्षीय संबंधों पर उनके संभावित प्रभाव शामिल रहे।

संयुक्त राष्ट्र महासभा के ७४वें सत्र के निर्वाचित अध्यक्ष महामहिम प्रो. तिज्जानी मुहम्मद-बांडे द्वारा वार्ता, सप्रू हाउस, 2 सितंबर, 2019

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 74वें सत्र के निर्वाचित अध्यक्ष महामहिम प्रो. तिज्जानी मुहम्मद बांडे ने विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्लयू) में दिनांक 2 सितंबर 2019 को ७74वें संयुक्त राष्ट्र महासभा की प्राथमिकताएंष पर एक वार्ता दी। आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टी.सी.ए. राघवन ने एच.ई. तिज्जानी का स्वागत किया। संयुक्त राष्ट्र में भारत के पूर्व स्थायी प्रतिनिधि और विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन, नई दिल्ली के प्रतिष्ठित अध्येता राजदूत अशोक मुकर्जी ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। वक्ता ने उल्लेख किया कि संयुक्त राष्ट्र का महत्व इतना अधिक है कि इसके बिना वहाँ अराजकता हो सकती थी। बहुपक्षवाद का संवर्धन और रखरखाव संयुक्त राष्ट्र के मूल सिद्धांतों में से एक है।

"इंडिया-अफ्रीका पार्टनरशिप इन ए ग्लोबल आर्डर: प्रायरटिज, प्रोसपैक्टस एण्ड चैलेन्जिस" पर राष्ट्रीय सम्मेलन सप्रू हाउस, 3-4 सितंबर, 2019

भारतीय विश्व मामलों की परिषद द्वारा दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन ''एक बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत-अफ्रीका साझेदारी: प्राथमिकताएं, संभावनाए तथा चुनौतियां'' विषय पर 3-4 सितंबर, 2019 को किया गया। राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रतिभागियों में शामिल थे, पूर्व राजनयिकगण तथा शिक्षाविद, देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा थिंक-टैंक्स से शोधार्थी एवं कनिष्ठ अनुसंधान अध्येत्ता। सम्मेलन में छह सत्र आयोजित किए गए नामत: राजनीतिक क्षेत्रों में पारस्परिकता; शासन और भू-राजनीति; आर्थिक और विकास सहयोग को बढ़ाना; भारत-अफ्रीका संबंधों में फैक्टरिंग डायस्पोरा; सामान्य सुरक्षा चुनौतियाँ: सहयोग की संभावनाए; लोगों का लोगों के सहयोग में वृद्धि: मीडिया, संस्कृति और शिक्षा विनिमय, और भारत में अफ्रीकी अध्ययन की स्थिति: स्टॉक लेना और भावी मार्ग।

डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा उद्घाटन उद्बोधन, और श्री टी.एस. तिरुमूर्ति, सचिव (आर्थिक संबंध), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मुख्य भाषण दिया गया। पिछले दो दशकों में अफ्रीका में उभरने वाले लोकतंत्रीकरण के रुझानों के बारे में विभिन्न सत्रों में चर्चा हुई कि किस प्रकार भारत के विश्व के दृष्टिकोण और दुनिया के बारे में अफ्रीका के दृष्टिकोण के बीच संबंध बनाने की आवश्यकता है। इसमें कहा गया है कि भारत और अफ्रीका के बीच के एजेंडे में नए मुद्दों को शामिल करने हेतु विस्तार करने की आवश्यकता है, जैसे कि नीली अर्थव्यवस्था, डेटा संरक्षण, डेटा प्रबंधन आदि। सत्रों ने यह भी आकलन किया कि अफ्रीका में भारतीय निवेश वर्तमान में ओडीए पैटर्न से व्यापार और निवेश की ओर किस प्रकार आगे बढ़ रहा है। यह भी उल्लेख किया गया कि बेहतर भारत-अफ्रीका सहयोग के लिए संस्थागत संरचनाओं को मजबूत करने की आवश्यकता है, और भारत को पूरे पूर्वी अफ्रीकी तट के नजरिए से देखते हुए, और समग्र आंतरिक विकास के माध्यम से अफ्रीका के साथ जुड़ने का प्रयास किस प्रकार करना चाहिए। इस बात पर भी चर्चा हुई कि कैसे ''लोगों से लोगों'' का सहयोग भारत-अफ्रीका संबंध बढ़ाने में महत्वपूर्ण घटक है, और यह सरकार से सरकार के बीच राजनीतिक संबंधों को बढ़ाने वाला एक प्रभावी कारक है।

समापन संबोधन भारत के उपराष्ट्रपति तथा आईसीडब्ल्यूए के अध्यक्ष, श्री एम. वैंकय्या नायडू, द्वारा दिया गया, तथा महामहिम अलेम त्सेहाये वोल्देमारियम, इरिट्रिया राज्य के राजदूत, डीन, अफ्रीकन हेड्स ऑफ मिशन्स और डिप्टी डीन, डिप्लोमैटिक कॉर्प्स ने भी समापन सत्र को संबोधित किया।

चौथा आईसीडब्ल्यूए-विदेश मामलों के लिए मिस्र परिषद (ईसीएफए) संवाद, काहिरा, 10-11 सितंबर, 2019

आईसीडब्ल्यूए के बाहरी साझेदार रणनीति के अधीन आईसीडब्ल्यूए द्वारा वर्ष 2012 में विदेश मामलों के लिए मिस्र परिषद (ईसीएफए) काहिरा, मिस्र के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया था। इस समझौता ज्ञापन के तहत पहले ही वर्ष 2012 और 2017 में दो आईसीडब्ल्यूए-ईसीएफए संवादों की मेजबानी की जा चुकी हैं।

संबंधों को और अधिक मजबूत करने की दिशा में तथा ईसीएफए का आईसीडब्ल्यूए में दौरों के आदान-प्रदान के लिए, आईसीडब्ल्यूए ने पूर्व में एक प्रतिनिधि-मंडल को ईसीएफए के साथ दो-दिवसीय संवाद हेतु 20-21 अप्रैल, 2015 के बीच कैरो भेजा था, तथा इसके उपरान्त पुनः एक आईसीडब्ल्यूए प्रतिनिधि मंडल ने ईसीडब्ल्यूए का दो-दिवसीय संवाद दौरा 10-11 सितंबर 2019 को किया।

आईसीडब्ल्यूए प्रतिनिधि-मंडल में पाँच सदस्य शामिल थे और इनका नेतृत्व राजदूत डॉ.टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने किया। प्रतिनिधि-मंडल के अन्य सदस्यों में शामिल थे, प्रोफेसर के. एम. सेठी, डॉ. मोहम्मद सोहराब, डॉ. संजीव कुमार और डॉ. फजूर रहमान सिद्दीकी। संवाद का प्रमुख बिन्दु मिस्र और भारत के बीच संबंधों में एक नई शुरुआत की संभावनाओं का पता लगाना था। इस वार्ता ने अरब दुनिया में नए उभरते राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था और इस क्षेत्र तथा दुनिया, दोनों के लिए इसके निहितार्थ की जाँच की। ईसीएफए पक्ष का प्रतिनिधित्व ईसीएफए के अध्यक्ष, राजदूत मुनीर जहरन, इसके निदेशक राजदूत एज्जात साद और ईसीएफए के अन्य सदस्यों द्वारा किया गया। इस दो दिवसीय संवाद में पाँच सत्र शामिल थे, और प्रत्येक सत्र में विशिष्ट विषयों पर चर्चा हुई। पहले सत्र में वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की गई जबकि द्विपक्षीय मुद्दा दूसरे सत्र का विषय था। अरब क्षेत्र के विकास, चीन-भारतीय संबंधों के विकास और बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) पर क्रमशः तीसरे और चौथे सत्र में चर्चा की गई। अंतिम सत्र दक्षिण एशिया में भारत-पाक संबंधों और सुरक्षा मुद्दे के लिए समर्पित था।

"हिंदी में विदेश नीति विमर्श को प्रोत्साहन" विषय पर परिचर्चा, सप्रू हाऊस 13 सितम्बर, 2019

विश्व मामलों की भारतीय परिषद, सप्रू हाउस द्वारा 13 सितम्बर, 2019 को हिंदी पखवाड़े के अवसर पर ''हिंदी में विदेश नीति विमर्श को प्रोत्साहन'' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया. इस परिचर्चा की अध्यक्षता राजदूत श्री अनिल त्रिगुणायत ने की. इस कार्यक्रम में वक्ता के रूप में राजदूत श्री अचल मल्होत्रा, प्रो. संजय भारद्वाज, डॉ राकेश कुमेर मीना और डॉ आशीष शुक्ल ने भाग लिया. इस परिचर्चा में हिंदी भाषा में विदेश नीति विमर्श पर विदेश मंत्रालय, अकादमिक क्षेत्र, मीडिया और थिंक टैंकों में हो रहे कार्य के प्रचार प्रसार और चुनौतियों पर गहन विचार विमर्श किया गया.

प्रो. वी. कामकोटि, प्रोफेसर, कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग, आईआईटी चेन्नई के द्वारा व्याख्यान, सप्रू हाउस, 24 सितंबर, 2019

विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने दिनांक 24 सितंबर 2019 को आईआईटी मद्रास के वरिष्ठ प्रो. वी. कामकोटी की अध्यक्षता में ''कैन इंडिया मेक हर ओन नेक्स्ट जनरेशन नेटवर्क?'' पर एक प्रस्तुति का आयोजन किया। डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने पैनलिस्टों और दर्शकों का स्वागत करने के बाद कहा कि प्रौद्योगिकी राष्ट्र के हर पहलू में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। श्री सतीश जमदग्नि, वीपी, रिलायंस, जियो, श्री शैलेश चोपड़ा, अभ्यास निदेशक, एचसीएल टेक. इंडिया लि., श्री जी. जयेंद्रन, जीएम, टाटा एलेक्सी, श्री जिष्णु अरविंदकशन, तेजस नेटवर्क्स, श्री बी.के. रघुवीर, सीईओ, निवेती सिस्टम्स श्री हेमंत मल्लापुर, सांख्य लैब्स प्रस्तुतियों के वक्ता थे।

श्री राघवेंद्र सिंह द्वारा 'इंडियाज लॉस्ट फ्रंटियर: द स्टोरी ऑपफ नॉर्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंस ऑफ पाकिस्तान' पर पुस्तक चर्चा, सप्रू हाउस, 26 सितंबर, 2019

विश्व मामलों की भारतीय परिषद द्वारा 26 सितंबर 2019 को भारत सरकार के पूर्व सचिव, श्री राघवेन्द्र सिंह द्वारा लिखित ' इंडियाज लॉस्ट फ्रंटियर: द स्टोरी ऑफ नॉर्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंस ऑफ पाकिस्तान' पर एक पुस्तक चर्चा आयोजित की गयी। इस चर्चा की अध्यक्षता डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा की गयी। लेखक ने इस पुस्तक की एक प्रस्तुति दी, जिसके बाद एक पैनल चर्चा की गई। चर्चा करने वालों में राजदूत राजीव डोगरा, कराची में भारत के पूर्व महावाणिज्यदूत, सुश्री इंद्राणी बागची, राजनयिक संपादक, टाइम्स ऑफ इंडिया और डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्यजी, अनुसंधान अध्येता, आईसीडब्ल्यूए थे।

आईसीडब्ल्यूए के आउटरीच कार्यक्रम

द पेनिनसुला फाउंडेशन द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, चेन्नई, 12-13 जुलाई-मई, 2019

द पेनिनसुला फाउंडेशन, चेन्नई द्वारा दिनांक 12-13 जुलाई, मई 2019 को ''इंडिया एंड द इंडियन ओशन रीजन: डायनामिक्स ऑफ जियोपोलिटिक्स, सिक्योरिटी एंड ग्लोबल कॉमन्स'' पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन आंशिक रूप से आईसीडब्ल्यूए द्वारा वित्तपोषित था। डॉ.टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने मुख्य संबोधन दिया। अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ रही विभिन्न भू-राजनीतिक गतिशीलता, आईओआरए की भूमिका, क्षेत्रीय और वैश्विक खिलाड़ी तथा भारत की भूमिका से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। डॉ. अमित कुमार, अनुसंधान अध्येत्ता, आईसीडब्ल्यूए ने सम्मेलन में भाग लिया।

विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ इंफार्मेशन एंड मैनेजमेंट स्ट्डीज, तमिलनाडु द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 12-13 जुलाई, 2019

विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ इंफार्मेशन एंड मैनेजमेंट स्ट्डीज (सूचना एवं प्रबंधन अध्ययन संस्थान) ने 12-13 जुलाई, 2019 को ''स्टार्ट-अप इंडिया: द विंग्स ऑफ फॉरेन ट्रेड'' पर एक दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन आंशिक रूप से आईसीडब्ल्यूए द्वारा वित्तपोषित था। इस सम्मेलन में दो दिनों में पाँच सत्रों का आयोजन किया गया और एक समापन सत्र के साथ इसका समापन हुआ। डॉ. प्रियंका पंडित, रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए सम्मानित अतिथि थीं और उन्होंने उद्घाटन सत्र में विशेष भाषण दिया।

सेंटर फॉर कैनेडियन, यूनाइटेड स्टेट्स एंड लैटिन अमेरिकन स्टडीज, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन, जेएनयू, 19-20 सितंबर, 2019

द यूनाइटेड स्टडीज प्रोग्राम ऑफ द सेंटर फॉर कैनेडियन, यूनाइटेड स्टेट्स एंड लैटिन अमेरिकन स्टडीज, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू ने जेएनयू में 19-20 सितंबर 2019 को ''भारत-अमेरिका-चीन: उभरते रणनीतिक समीकरण'' पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्देश्य भारत-अमेरिका-चीन के बीच उभरते रणनीतिक समीकरणों को समझना था, और यह जानना था कि भारत किस प्रकार वर्तमान भू-राजनीतिक वातावरण में अपने हितों को सुरक्षित करेगा। डॉ. टी. सी.ए. राघवन ने इस पर समापन टिप्पणी प्रदान की और सम्मेलन में डॉ. स्तुति बैनर्जी, डॉ. तेम्जेनमरेन आओ और डॉ. विवेक मिश्रा, अनुसंधान अध्येत्ता, आईसीडब्ल्यूए ने भाग लिया।

जादवपुर एसोसिएशन ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन, कोलकाता, 20-21 सितंबर, 2019

20–21 सितंबर, 2019 को, ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, कोलकाता के सहयोग से जादवपुर एसोसिएशन ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस ने "एंगेजिंग एशिया: इंडियाज फोरेन पॉलिसी इन द 21 सेंचुरी'' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन आंशिक रूप से आईसीडब्ल्यूए द्वारा वित्तपोषित था। इस सम्मेलन में परिषद का प्रतिनिधित्व डॉ. जोजिन वी. जॉन, अनुसंधान अध्येत्ता, आईसीडब्ल्यूए ने किया। दो–दिवसीय सम्मेलन में भारत के एशिया के साथ संलग्नता के विशेष परिप्रेक्ष्य के साथ भारतीय विदेश नीति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। उद्घाटन सत्र एवं समापन सत्र के अतिरिक्त, सम्मेलन में दो पैनल चर्चा और चार तकनीकी सत्र शामिल थे।

कोलकाता सोसायटी फॉर एशियन स्टडीज द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन, 23-24 सितंबर, 2019

दिनांक 23–24 सितंबर, 2019 को विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, कोलकाता और बुद्ध एयर, काठमांडू के सहयोग से कोलकाता सोसायटी फॉर एशियन स्टडीज द्वारा ''भारत नेपाल संबंध: 21वीं सदी में द्विपक्षीय संबंधों का कायाकल्प'' पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

अनुसंधान अध्येता, डॉ राकेश कुमार मीणा ने आईसीडब्ल्यू का प्रतिनिधित्व किया और उन्होंने मोदी 2.0 के तहत भारत नेपाल संबंध पर एक पत्र भी प्रस्तुत किया है। इसमें उत्तरी और मध्य भारत के अधिकांश राज्यों के राजनयिकों, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया। नेपाल की ओर से मंत्रियों, राजनयिकों और विद्वानों ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया।

आईसीडब्ल्यूए विश्लेषण (जुलाई-सितंबर 2019)

दृष्टिकोण		
1	डॉ. फजूर रहमान सिद्दीकी	सूडान में उमर अल-बशीर का बदलाव: न्यू हॉटस्पॉट ऑफ काउंटरवैल्यूशन (2 जुलाई)
2	डॉ. प्रियंका पंडित	14वां जी20 शिखर सम्मेलन: मैनेजिंग एक्सपेक्टेशन (प्रबंध की उम्मीदें) (10 जुलाई)
3	डॉ. संजीव कुमार और डॉ. अतहर जफर	एससीओ 2019 शिखर सम्मेलन: भारत का एक दृश्य (11 जुलाई)
4	डॉ. जोजिन वी. जॉन	ट्रम्प-किम डीएमजेड बैठक: ए न्यू नॉर्मल इन यूएस-नॉर्थ कोरिया रिलेसन्स (20 जुलाई)
5	डॉ. टेम्जेनमरेन एओ	जुलाई 2016 से फिलीपींस का चीन के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन (31 जुलाई)
6	डॉ. सुरभि सिंह	चुनावी मंथन और (पुन:) ग्रीस में न्यू डेमोक्रेसी पार्टी की सत्ता की वापसी (9 अगस्त)
7	डॉ. इंद्राणी तालुकदार	तुर्की का एस-400: पश्चिम के विरूद्ध राजनीतिक अवहेलना? (19 अगस्त)
8	डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्यजी	कुलभूषण जाधव केस पर आईसीजे का फैसला (20 अगस्त)
9	डॉ. संजीव कुमार	वुहान अनौपचारिक ष्ठिाखर सम्मेलन के बाद से भारत-चीन के बीच संबंध (3 सितंबर)
10	डॉ. स्तुति बनर्जी	प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति ट्रम्प: द्विपक्षीय संबंधों पर पुन: ध्यान केंद्रित (17 सितंबर)
11	डॉ. अंकिता दत्ता	भारत-बाल्टिक संबंध: क्षेत्र में उपराष्ट्रपति की यात्रा की समीक्षा (24 सितंबर)
12	बिहू चमड़िया	2019 का हांगकांग विरोध और चीन का एक देश, दो सिस्टम (27 सितंबर)
संक्षिप्त मुद्दे		
1	डॉ. अंकिता दत्ता	यूरोपीय संघ के राजनीतिक मानचित्र का पुन: आरेखण: यूरोपीय संसद के चुनावों से महत्वपूर्ण जानकारी (1 जुलाई)
2	तरंग जैन	परमाणु समझौते या शासन-परिवर्तन को पुन: संगठित करना: ईरान में अमेरिकी 'अधिकतम दबाव' अभियान को समझना (2 जुलाई)

3	डॉ. इंद्राणी तालुकदार	भारत-रूस आर्थिक संबंधों में विकास: पहली भारत-रूस सामरिक आर्थिक वार्ता से लिया गया स्टॉक (सरकारी नोट) (3 जुलाई)
4	डॉ. स्तुति बनर्जी	मिस्र का वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य (20 मई)
5	डॉ. समथा मल्लेम्पति	श्रीलंका की समस्याएं: इसका नेतृत्व कहाँ होता है? (6 अगस्त)
6	डॉ. दीनोज कुमार उपाध्याय और डॉ. अतहर जफर	भू-राजनीतिक वातावरण में रूस-जर्मनी ऊर्जा योजक रेखा (22 अगस्त)
7	डॉ आशीष शुक्ला	जाधव केस में आईसीजे जजमेंट का विश्लेषण (27 अगस्त)
8	डॉ. अंकिता दत्ता	यूरोपीय संघ-मध्य एशिया के संबंधों में ऊर्जा गतिशीलता: समीक्षा (30 अगस्त)
9	डॉ. अतहर जफर	एशिया में शिफ्टिंग फोकस में सीआईसीए गेनिंग डायनामिज्म (30 अगस्त)
10	डॉ. चंद्र रेखा	आफ्टर इंटरमीडिएट-रेंज न्यूक्लियर फोर्सेस ट्रीटी डेमीज: एक नए शीत युद्ध के इतिहास में रूस-अमेरिकी की प्रतिद्वंद्विता को समझना (18 सितंबर)
11	डॉ. प्रज्ञा पांडेय	हिंद महासागर में भारत-फ्रांस समुद्री सहयोग: सामरिक साझेदारी को बढ़ाना (24 सितंबर)
	नीति संक्षेप	
1	सोनम डेडेन डेन्जोंगपा	प्रवासन की बदलती वास्तविकता और प्रारूप उत्प्रवास विधेयक 2019 (30 अगस्त)

इंडिया क्वार्टली:
अंतर्राष्ट्रीय मामलों की एक पत्रिका
संस्करण 75, अंक 3,
जुलाई-सितंबर 2019

आईसीडब्ल्यूए के बारे में

विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) भारत की सबसे पुरानी विदेश नीति थिंक टैंक है, जिसके पास विदेश और सुरक्षा नीतिगत मुद्दों में विशेषज्ञता है। यह भारत के प्रथम प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणा से प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा भारत की स्वतंत्रता से पहले 1943 में स्थापित किया गया। विश्व मामलों की भारतीय परिषद को संसद के एक अधिनियम द्वारा 2001 में ष्राष्ट्रीय महत्व का संस्थानष घोषित किया गया है।

परिषद अपने आंतरिक संकाय सदस्यों के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति अनुसंधान का संचालन करती है। यह सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज चर्चाओं, व्याख्यानों और प्रकाशनों सहित नियमित रूप से बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला का आयोजन करता है। यह महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय, वेबसाइट तथा ''इंडिया क्वार्टरली'' नामक पत्रिका का अनुरक्षण करता है। यह अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की भूमिका, और सरकार तथा सिविल सोसाइटी नीति मॉडल और रणनीतियों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने में जुटा हुआ है, और बहु-स्तरीय संवाद व अन्य विदेशी थिंक टैंक्स के साथ बातचीत के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

न्यूजलेटर आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली - 110001 द्वारा प्रकाशित
वेबसाइट: http%@@www.icwa.in; दूरभाष संख्या 011-23317246 फैक्स नंबर 011-23310638

दिशा निर्देशक
डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली।

संपादक
नूतन कपूर महावर, सयुक्त सचिव, आईसीडब्ल्यूए

प्रबंध संपादक
डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए

सहायक संपादक
डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए